विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम दिनांक -22 - 09 - 2021

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक - पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नमक का दरोगा के बारे में अध्ययन करेंगे

जाड़े के समय एक रात वंशीधर अपने दफ़्तर में सो रहे थे। उनके दफ़्तर से एक मील पहले जमुना नदी थी जिसपर नावों का पुल बना हुआ था। गाड़ियों की आवाज़ और मल्लाहों की कोलाहल से उनकी नींद खुली। बंदूक जेब में रखा और घोड़े पर बैठकर पुल पर पहुँचे वहाँ गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल पार कर रही थीं। उन्होंने पूछा किसकी गाड़ियाँ हैं तो पता चला, पंडित अलोपीदीन की हैं। मुंशी वंशीधर चौंक पड़े। पंडित अलोपीदीन इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपयों का व्यापार था। वंशीधर ने जब जाँच किया तब पता चला कि गाड़ियों में नमक के ढेले के बोरे हैं। उन्होंने गाड़ियाँ रोक लीं। पंडितजी को यह बात पता चली तो वह अपने धन पर विश्वास किए वंशीधर के पास पहुँचे और उनसे गाड़ियों के रोकने के बारे में पूछा। पंडितजी ने वंशीधर को रिश्वत देकर गाड़ियों को छोड़ने को कहा परन्तु वंशीधर अपने कर्तव्य पर अडिग रहे और पंडितजी को गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया। पंडितजी आश्चर्यचकित रह गए। पंडितजी ने रिश्वत को बढ़ाया भी परन्तु वंशीधर नहीं माने और पंडितजी को गिरफ्तार कर लिया गया।

अगले दिन यह खबर हर तरफ फैली गयी। पंडित अलोपीदीन के हाथों में हथकड़ियाँ डालकर अदालत में लाया गया। हृदय में ग्लानि और क्षोभ और लज्जा से उनकी गर्दन झुकी हुई थी। सभी लोग चकित थे कि पंडितजी कानून की पकड़ में कैसे आ गए। सारे वकील और गवाह पंडितजी के पक्ष में थे, वंशीधर के पास केवल सत्य का बल था। न्याय की अदालत में पक्षपात चल रहा था। मुकदमा तुरन्त समाप्त हो गया। पंडित अलोपीदीन को सबूत के अभाव में रिहा कर दिया गया। वंशीधर के उद्दण्डता और विचारहीनता के बर्ताव पर अदालत ने दुःख जताया जिसके कारण एक अच्छे व्यक्ति को कष्ट झेलना पड़ा। भविष्य में उसे अधिक होशियार रहने को कहा गया। पंडित अलोपीदीन मुस्कराते हुए बाहर निकले। रुपये बाँटे गए। वंशीधर को व्यंग्यबाणों को सहना पड़ा। एक सप्ताह के अंदर कर्तव्यनिष्ठा का दंड मिला और नौकरी से हटा दिया गया।

पराजित हृदय, शोक और खेद से व्यथित अपने घर की ओर चल पड़े। घर पहुँचे तो पिताजी ने कड़वीं बातें सुनाई। वृद्धा माता को भी दुःख हुआ। पत्नी ने कई दिनों तक सीधे मुँह तक बात नहीं की। एक सप्ताह

बीत गया। संध्या का समय था। वंशीधर के पिता राम-नाम की माला जप रहे थे। तभी वहाँ एक सजा हुआ एक रथ आकर रुका। पिता ने देखा पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर उन्हें दंडवत किया और चापलूसी भरी बातें करने लगे, साथ ही अपने बेटे को कोसा भी। पंडितजी ने बताया कि उन्होंने कई रईसों और अधिकारियों को देखा और सबको अपने धनबल का गुलाम बनाया। ऐसा पहली बार हुआ जब कोई व्यक्ति ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा द्वारा उन्हें हराया हो।